"संत शिरोमणि गुरु घासीदास"

डॉ. शंकर लाल टोडर

सत्नाम धार्म प्रवर्तक सद्गुरु घासीदास जी का छत्तीसगढ़ में वही स्थान है, जो पंजाब में गुरु नानक, गुजरात में नरसिंह मेहता, महाराष्ट्र में संत ज्ञानेश्वर तथा बंगाल में चैतन्य महाप्रभु का है। उनका अवतरण शोषितों, निःसहायों एवं दीन-दुखियों को, उनके घोर अंधाकारमय जीवन को, ज्ञान- प्रकाश से आलोकित करने सहस्र किरणयुक्त अरुण की भाँति हुआ था। उनकी जीवन गाथा, पशुता के साथ मानवता, अत्याचार के साथ प्रेम, अन्याय के साथ न्याय और असत्य के साथ सत्य के संघर्ष की कहानी है। उनकी अलौकिक शक्ति और महामानवीय गुणों ने उन्हें अल्प समय में ही तमाम अवरोधों के बावजूद विशाल जनसमूह का पथ प्रदर्शक एवं धार्म प्रवर्तक बनाया। उनके उपदेश सद्गुणों से परिपूर्ण, अगाधा प्रेम का स्रोत, तर्क पूर्ण, अकाट्य, वसुधौव कुटुम्बकम् तथा विश्व बंधुत्व की भावना से ओतप्रोत तथा पवित्र् हैं। उनके सिद्धान्त सरल, सत्यमय,तमाम आडंबरों से मुक्त एवं प्रत्यक्ष है। उन्होंने न केवल छत्तीसगढ़ के दलित, शोषित एवं दीन-दुखियों का उ्द्धार किया बल्कि तमाम संकीर्णताओं से उन्हें उठाकर सुसंस्कृत करने का प्रयास भी किया।

गुरु घासीदास का जन्म तात्कालीन, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं राजनैतिक आवश्यकताओं की पूर्ति था। उस समय छत्तीसगढ़ की धारती अराजकता, अस्थिरता, अत्याचार, अनाचार, आडंबर, लूट आदि की ज्वाला से धाधाक रही थी। उनका समय मराठा शासन एवं ब्रिटिश हुकूमत का संधिा काल था। यहाँ के भाग्य की डोर नागपुर के राजघराने से जुड़ी थी। अधिाक-से-अधिाक राजस्व अदा करने के

वचन देने वालों को यहाँ की सूबेदारी दे दी जाती थी। लूट चरम-सीमा लाँघ रही थीं। पिण्डारियों के समूह डाकुओं के समूह थे जो अत्याचार करते हुए जनता को लूटते थे। छुआ-छूत बढ़ चुकी थी। छोटे वर्ग के लोगों की स्थिति दयनीय थी। उस समय की विभीषिका को चित्रित करते हुए सिमगा निवासी श्री खाण्डेराव भोंसले ने अपनी कृति राधाविनोद द्ध1820 ई.) में लिखा है-

''चलहि नृप नीति विहाई। '' राजालोग अपनी नीति को छोड़कर चल रहे थे।

''परधान देखि जरहिं नृप गाता,
केहि विधि हरहुँ तासु धान प्रातः।।''
''प्रातः होत केहि विधि धान हरहिं.....''
''यहि विधि लूटहिं प्रजा दोउ,
भूपति भल न मनावहिं कोउ।''

इस तरह राजा और डाकू में कोई भेद नहीं रह गया था। आगे-

ह्वरन विवेक विचार न लेहिं.....ह्न
जे घर सुन्दर देखिय नारी,
तेहि सन करहिं मिताई भारी।
मेघाधाार तेहि लखि सूना.....अति करहिं कुकर्मा।

उस समय इस अंचल को एक क्रांतिकारी युग पुरुष की आवश्यकता थी, जो इस क्षेत्र् को प्रकाश में लाकर आधयात्मिक जीवन से उन्नत कर सुसंस्कृत समाज में परिवर्तित कर सके। गुरु घासीदास ने उस आवश्यकता को पूरा किया तथा छत्तीसगढ़ को सुसंस्कृत बनाया। उन्होंने छत्तीसगढ़ को एकरूपता एवं धाार्मिक आस्था का एक केन्द्र और उच्चकोटि का जीवन दर्शन दिया।

गुरु घासीदास का जन्म बिलाईगढ़ जमींदारी के अंतर्गत पहाड़ियों की गोद में बसे

ग्राम गिरौदपुरी, जिला बलौदाबाजार में 18 दिसम्बर की सुभग रात्रि् द्धपूर्णिमा की रात्रि) में 4 बजे की पवित्र् बेला में सन् 1756 में हुआ। उनके पिता का नाम महँगूदास और माता का नाम अमरौतिन था।

गुरु घासीदास का बचपन कटु सत्य की अनुभूति में बीता। वे अति सुन्दर तथा बड़ी कुशाग्र बुढ़ा के थे। छोटी-सी-छोटी सामाजिक, धाार्मिक व राजनैतिक घटना का उनके मन मस्तिष्क पर गहरा असर होता था। बालक घासीदास उस घटना से विचलित हो उठते थे और उनके कारणों को जानने का प्रयत्न करते थे। उनके मन में अनेक प्रश्न उठने लगते थे। कभी-कभी वे प्रश्न इतने जटिल होते थे कि उनके उत्तर हेतु उनका कोमल मन विचलित हो उठता था। वर्ण व्यवस्था के फलस्वरूप मानव-मानव में छुआ-छूत, ऊँच-नीच, सवर्ण-अवर्ण आदि के भेद, मानव द्वारा मानव पर हो रहे अत्याचार एवं अमानवीय व्यवहार, से वे दुखी हो उठते थे। इनके अतिरिक्त छत्तीसगढ़ी समाज में तंत्र् मंत्र् की साधाना के विकृत रूप टोनही, बैगा, पंगहा आदि का आतंक भी गाँवों में व्याप्त था। उनके बाल मन में अनेक प्रश्न उठ रहे थे। उन जटिल प्रश्नों के हल हेतु वे हमेशा विचारमग्न रहते, चिन्तन मनन करते, किन्तु हल नहीं निकल पाने पर विचलित हो जाते थे। पिता भी उनके प्रश्नों को सुनकर चकित हो जाते थे। विरक्तता भरे उन प्रश्नों को उनके मन से हटाने के लिए वे उन्हें अपने साथ कृषि कार्य में व्यस्त रखना चाहते थे, किन्तु वहाँ भी वे पिता से ऐसे प्रश्न करते जिसे सुनकर महँगूदास निरुत्तर हो स्तब्धा रह जाते थे। बालक घासीदास अपनी समझ एवं खोजी मस्तिष्क से 5 काठा धाान को 5 एकड़ में बोकर, भारी फसल लेकर, भटा के पौधो में द्धजीन्स विज्ञान के प्रयोग सेऋ मिर्च फलाकर, खेत में गरियार बैलों को हल में चलाकर, सबको चमत्कृत कर दिया करते थे। नाग के काटे बुधाारू की चिकित्सा ने उन्हें चर्चा का विषय बना दिया। 'होनहार बिरवान के होत चीकने पात' को चरितार्थ करते हुए उन्होंने महामानव होने का संकेत दे दिया। महँगूदास घासीदास जी की

तीव्र बुढ़ा को भाँपकर उनके विचारों को अपने ढंग से अर्थ लगाकर उन्हें मानाकोनी ग्राम की निजी शाला में दाखिला दिलाना चाहा, किन्तु जाति भेद ने असफल कर दिया। इस घटना ने घासीदास जी को विरक्तता की ओर बरबस ढकेल दिया। अब वे डोंगरी के एकांत स्थान में जाकर चिन्तन करने लगे। इस प्रकार घासीदास जी ने विषमताओं की तीव्र आँधी में अत्याचार रूपी धूल कणों के तीव्र थपेड़ों को सहते हुए युवा अवस्था में पदार्पण किया।

गुरु घासीदास जी के चिन्तन-मनन से भयभीत होकर महँगूदास ने उनका विवाह सिरपुर निवासी श्री अंजोरी की सफुरा नामक सुकन्या से कर दिया। इससे घासीदास जी के चिन्तन में कुछ बाधाा अवश्य पड़ने लगी।

समय का खेल बड़ा अजीब होता है। वह राजा को रंक और रंक को राजा बना देता है। उसी तरह वह गृहस्थ को संन्यासी और संन्यासी को गृहस्थ बना सकता है। इसमें किसी का कुछ नहीं चलता। बड़े पुत्र् अमरदास का अपहरण, पिता की मृत्यु, भाइयों के अलग होने आदि घटनाओं ने घासीदास जी के जीवन में ऐसा परिवर्तन लाया कि उनके मन में वैराग्य की तेज लहर आई और उन्हें बहाकर ले गई। सब देखते रह गए। सफुरा चार बच्चों की माँ बन जाने के बाद भी उन्हें रोकने में असमर्थ हो गई। कहते हैं कि घरेलू घटना को किसी दैवीय प्रकोप मानकर गाँव वाले शांति हेतु घासीदास जी को अपने साथ जगन्नाथपुरी ले जा रहे थे, सारंगढ़ के जंगलों को पार करते समय अचानक वे साथियों को छोड़कर कहीं चले गए, छः माह तक उनका कोई अता-पता नहीं चला।

कौवाताल के चंदनहिया गौंटिया के नौकरों ने गिरौदपुरी आकर बताया कि घासीदास जी छाता पहाड़ के ऊपर बैठे हुए थे। इधार घासीदास जी उस स्थान को परिवर्तन करके गिरौदपुरी के निकट एक पहाड़ी पर औंरा-धाौंरा पेड़ तले धूनी रमाकर तप करने लगे। किवदंती है कि वहीं पर उन्हें आत्मज्ञान की प्राप्ति हुई और आत्मज्ञान

से सतनाम को प्राप्त किया।

सद्गुरु के वृहद् सतनाम प्रचार हेतु आपने पूरे छत्तीसगढ़ का दौरा किया, जिसके अंतर्गत प्रथम धार्मिक पड़ाव भंडारपुरी में, दूसरा रतनपुर के दुलहरा तालाब में, तृतीय पड़ाव पानाबरस में, चौथा पड़ाव भोरमदेव कवधा में, पांचवाँ पड़ाव डोंगरगढ़ की बमलेश्वरी मंदिर के पहाड़ के नीचे, छठवाँ कांकेर में और सातवां पड़ाव चिरईपदर दंतेवाड़ा में किया। यही स्थल गुरु घासीदास जी के रावटी स्थल द्धधार्मिक पड़ाव स्थलऋ माना गया।

अभ्यास के प्रश्न

1. "समय का खेल बड़ा अजीब होता है, वह राजा को रंक और रंक को राजा बना देता है" । आप इस बात से कहाँ तक सहमत है? सतर्क उत्तर दीजिए।
2. 'महापुरूषों की पहचान कठिन समय में उनके द्वारा किए गए कार्यों से होती है।' गुरू घासीदास के जीवन को धयान में रखते हुए इस बात की पुष्टि कीजिए।
3. 'होनहार बिरवान के होत चीकने पात' घीसदास जी के संबंधा में यह कथन कहाँ तक सत्य है? उदाहरण देकर समझाइए।
4. विषमताओं की तीव्र आँधी में अत्याचार रूपी धूल कणों के तीव्र थपेड़ों को सहते हुए घासीदास का बचपन बीता। वो विषमताएँ क्या थी? लिखिए।
5. किन -किन घटनाओं के फलस्वरूप घासीदास के मन में वैराग्य जागा? यदि उनकी जगह आप होते तो आप क्या करते?
6. कल्पना कीजिए कि आप जिस समाज में रह रहे है, उसमें नशाखोरी ओर जुए की कुप्रथा व्याप्त है। आप उस समस्या के निदान के लिए क्या कदम उठाऐंगे?
7. पिछड़े हुए समाज में लोग प्रायः प्राकृतिक, स्वास्थ्यगत या घरेलु घटनाओं के

घटित होने का कारण दैवीय प्रकोप को मानते हैं एवं उनके निदान के लिए पूजा-पाठ, तंत्र्-मंत्र् का ओझा-गुनी का सहारा लेते हैं। ऐसा करना कितना उचित है? उदाहरण के साथ उत्तर दीजिए।

8. सात रावटी से क्या तात्पर्य है?

कुछ करने या सोचने के लिए -

1. पाठ में प्रयुक्त आडम्बर, संकीर्णता वैराग्य, विषमता, कटुसत्य आत्मज्ञान आदि शब्दों के अर्थ एवं भावों पर समूह में चर्चा कीजिए ।
2. मराठा शासन एवं ब्रिटिश हुकूमत का संधि काल का उल्लेख पाठ में आया है। इतिहास की पुस्तक अथवा शिक्षक की मदद से उक्त संधि-कालीन समस्याओं/अवस्थाओं के विषय में जानकारी हासिल कीजिए।